॥ २ छपाई ५००० पुस्तक। दाम ३ पाई॥

केशव राम की कथा।

इलाहाबाद मिशन प्रेस में छपी सन १८७५ ई० ॥

कृष्टियन वर्नेक्यूलर इडूकेशन सुसैटी की ओर से

"Keshab Rám kí Kathá"
Sketch of the Life of Keshab Rám
by A. Brodhead Class of '57
Hindi Language
II.2
SCP 11,673
Library of Princeton Theological Seminary

केशव राम की कथा।

मेरा नाम केशव राम है। श्रीनगर जो हिमालय पहाड़ में है मेरा जन्मस्थान था। मेरे माता पिता ब्राह्मण थे और मेरा पिता पुरोहित था। वे दोनों चाहते थे कि मैं हिन्दू धर्म्म को अच्छी रीति से जानूं और बड़ा श्रम करके मुझे शिक्षा देते रहे। और यह बात उन की इच्छा के सिद्ध करने की उपकारक थी कि मैं ऐसे स्थान में रहता था जो पवित्र

गिना जाता था और जहां बहुतेरे पण्डित रहते थे और पूजा करने के लिये तीर्थयात्री आया जाया करते थे। श्रीनगर गङ्गा नदी के तीर पर बसा है। उस्से उत्तर दिशा में साठ कोस की दूरी पर गङ्गोत्री पहाड़ दिखाई देता है जहां से गङ्गा नदी बह निकलती है। वह घेरे हुए पहाड़ों से ऊंचा है और उस की चोटी हिम से सदा ढंपी रहती है। इस देश के बहुधा लोग समझते हैं कि गङ्गा नदी स्वर्ग से उतरके इसी स्थान से पृथिवी को पहुंचती है परन्तु यह कल्पित है॥

प्रतिवर्ष पीठ पर गठरी बांध और हाथ में छड़ी ले बहुधा तीर्थयात्री लोग अपने अपने घरों को छोड़ गङ्गोत्री की ओर

चलते हैं। वे अड़बड़ पहाड़ पर चढ़के और खड्डों में उतरके और सूखे नालों में टहलके और कंदरों के नीचे टटोल टटोलके और बड़ा क्लेश और श्रम उठाके महीनों की यात्रा करते हैं। वे इस कारण भूख और ठंढ और क्लेश और भय को उठाते हैं कि वे समझते हैं कि उस स्थान में जहां गङ्गाजी और नदियों से नहीं मिलती वहां वह अधिक पवित्र है और इस हेतु वहां नहाने की अभिलाषा अधिक करते हैं। यदि वे लोग इस बात के चिन्तक होवें कि उस नदी के मूलस्थान को पहुंचें जिस का वर्णन परमेश्वर के बचन में है और जो ईश्वर के सिंहासन से निकलके स्फटिक के तुल्य

निर्मल है और उस के तीर में जीवन का पेड़ लगा हुआ है जिस के पत्ते सकल देशबासी के चंगा करने के लिये हैं तो यह कैसी अच्छी बात होती ॥

श्रीनगर की दक्षिण ओर छत्तीस कोस के लगभग हरिद्वार बसा है और उस स्थान में गङ्गा नदी पहाड़ी देश को त्याग भाबर में पहुंचती है। थोड़े लोग गङ्गोत्री को पहुंच सक्ते हैं परन्तु बहुतेरे हरिद्वार को जाते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि बिना हरिद्वार के देखे मरना भयङ्कर और दुःखदायक होगा परन्तु यदि उसे देखें तो कल्याण प्राप्त होगा। इस कारण प्रतिवर्ष चारों ओर से अर्थात् सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों

के तीर और तिब्बत की ओर और दक्षिण और प्रतीचीन हिन्द से यात्री लोग हरिद्वार को पहुंचते हैं और गङ्गा में नहाके और ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देके मगन हो शान्ति पा अपने अपने घर को चले जाते हैं। ऐसे ऐसे स्थानों के दर्शन करने में मैं ने अपना यौवन बिताया। मेरे पिता ने मुझे शिक्षा दिई कि हिन्दू धर्म्म न केवल परलोक परन्तु इस लोक के लिये भी उपकारक है और अवश्य है कि उस के द्वारा से मैं अपनी जीविका पाऊं। इस लिये चित्त दे लौ लगा मैं ने शास्त्रों और पुराणों को पढ़ा और पिता के सङ्ग हरिद्वार को जाया करता था जिसतें गङ्गा में नहाके और

ब्राह्मणों को दक्षिणा दे उन से असीस पाके मैं पवित्र बनूं और मुक्ति को प्राप्त करूं। मैं कभी न भूलूंगा कि क्याही अतिविलास से मैं उन दिनों में तीर्थ को जाता था और यह भी जब मुझे लौटना पड़े तो इस कारण कि मेरी इच्छा प्राप्त न हुई मैं निराश हो लौटा। इस रीति से सत्रह बरस बीते। इतना मुझे निश्चय था कि परमेश्वर का पापी हूं और मैं अपने स्वर्गबासी पिता को मनाया चाहता था परन्तु नहीं जानता था कि मेल क्योंकर हो सक्ता है। पोथियों में जो मैं ने पढ़ीं इस बात के विषय में पता भी न मिला और मेरे पिता ने जब शिक्षा दिई तो ऐसी दिई कि जैसा अन्धा

अन्धे को मार्ग बतावे। मैं बुद्धिमान पण्डितों के पास भी गया जो हरिद्वार में मिले और उन से यह उपदेश पाया कि मूरत पूजने और दान दक्षिणा देने और गङ्गा नहाने और ध्यान व्रत इत्यादि करने से मन की शुद्धता और सदा की शान्ति प्राप्त होगी। पण्डितों का यह बखान सुनकर मैं बूझने लगा कि ये पण्डित लोग मेरी दशा नहीं जानते यदि जानते तो ऐसे उपाय जो निष्फल ठहर चुके न बताते। अन्त को ऐसा पड़ा कि एक बेर हरिद्वार को जाके मैं ने किसी पादरी साहिब को कई याचियों को सुनाते देखा और उन लोगों में जा मिलकर मैं उस का उपदेश सुनता रहा। साहिब

यह कहता था कि सकल मनुष्य पापी होके परमेश्वर के क्रोध के तले और नरक के योग्य हैं। इतना सुनकर मैं अचम्भा करने लगा कि जो बात प्रत्यक्ष है साहिब इस पर क्यों प्रमाण लाके सिद्ध करता है। सुनाते सुनाते शेष में साहिब ने यह पूछा कि क्या सभों का मरना अवश्य है। क्या कोई उपाय नहीं है जिस के द्वारा हम आनेवाले क्रोध से बचें और परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करें। तब याचियों के उन सहस्रों की ओर जो गङ्गा में नहाते या उस के तीर पर प्रार्थना करते थे सैन करके साहिब ने कहा कि जिन उपायों पर ये लोग आस्था धरते हैं वे क्याही अयोग्य

और निर्बल हैं। यदि वे परमेश्वर की पवित्रताई और न्याय और पाप की अति दुष्टता भी जानते तो नहीं मानते कि गङ्गाजल पाप मिटाने और मुक्ति प्राप्त करने योग्य है। उस ने यह भी वर्णन किया कि पाप की क्षमा होने से पहिले अवश्य है कि उस के लिये ऐसा प्रायश्चित्त होवे जो परमेश्वर का इच्छापूरक होवे। और पापियों को अपने पाप से पछताके उन्हें सम्पूर्ण रीति से त्यागना अवश्य है क्योंकि परमेश्वर कहता है कि जो प्राणी पाप करता है सो भी मरेगा। और जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है वह मनुष्य नहीं कि झूठ बोले। क्या वह कहे और न करे अथवा बोले और उसे पूरा न करे॥

जब यह सुना चुका तब उपदेशक ने एक अचम्भित वर्णन किया। उस ने यह कहा कि यिसू मसीह जो पाप से अनजान था उस को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप अर्थात् पाप की भेंट बनाया कि उस में हम परमेश्वर के धर्म्म बनें। और मसीह ने आप हमारे पापों को अपने देह में काठ पर उठा लिया जिसतें हम लोग पापों के लिये मर करके धर्म्म के लिये जीवें। पापियों के बचानेहारे अर्थात् मसीह की मन मारी और धैर्य्य और परार्थ प्रार्थना का जो बखान मैं ने उस समय सुना उस बखान से मेरे मन में मसीह के लिये अति प्रशंसा उपजी और उस के और विष्णु के दश अवतारों के चरित्र मिलाके मैं ने निश्चय

जाना कि मसीह पवित्र और सूधा और निर्मल और पापियों से अलग था परन्तु दश अवतारों में कितने अशुद्ध और कठोर और सर्वद्रोहीबुद्धि थे। तब मेरे मन में सोच उपजा कि क्या यह जिस को साहिब वर्णन करता है सचमुच अथवा कल्पित बचानेहारा है। यदि सचमुच है तो किस को बचाने आया। क्या वह मुझे बचाने के योग्य और बचाने को भी सिद्ध है। उस के पीछे पादरी साहिब बोलते बोलते यह कहने लगा कि मत बूझो कि यिसू बचानेहारा केवल मेरे देश के लोगों को बचाने आया। वह खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया है। और इस कारण कि सकल लोग

खोये हुए हैं तो निश्चय है कि न केवल मुझ को परन्तु तुम्हें भी और सभों को बचाने आया। और इस के अनुसार वह आपही कहता है कि जो चाहे सो आवे। और अपने बचन में वह हमें दृढ़ता से बताता है कि जो लोग मेरे द्वारा से ईश्वर के पास आते हैं मैं उन का त्राण अत्यन्त लों कर सक्ता हूं। तब साहिब ने हम पर पश्चात्ताप करने और मसीह को ग्रहण करने की अवश्यता को प्रगट किया इस कारण कि परमेश्वर के बचन में लिखा है कि स्वर्ग के नीचे दूसरा नाम नहीं है जो मनुष्यों के बीच में दिया गया है जिस्से हमें त्राण पाना होगा। तब अपने उपदेश को सम्पूर्ण करके साहिब

आस पास के लोगों को पुस्तकें बांटने लगा और इस लिये कि मैं ने उन बातों के विषय में जो सुन चुका था और सीखने चाहा तो साहिब के पास गया और तीन पुस्तकें पाईं ॥

उस के थोड़े समय पीछे अपने पिता और कितने परोसियों के सङ्ग अपने घर को चला आता था । जब कहीं टिका तो पुस्तकों को सुनाया । फिर चलते चलते उन बातों की चर्चा हो रही थी जो पुस्तकों से निकाली गईं। यदि मेरा पिता जानता कि ये बातें मुझे कैसी अच्छी लगती हैं तो क्रोधित हो मुझे ऐसी चर्चा से मना करता । उस ने उस समय कभी नहीं बूझा कि मेरा पुत्र ईसाई हो जायेगा। और मैं भी उस

समय ऐसा नहीं बूझता था परन्तु ज्यों ज्यों मैं ने मुक्ति के उस उपाय के विषय में शिक्षा पाई जो यिसू मसीह के द्वारा से है त्यों त्यों वह मुझे अति प्रसन्न और ग्रहण करने के योग्य ठहरी ॥

जब घर को पहुंचा तब शीघ्र यह चर्चा फैल गई कि केशव राम के पास कितनी पुस्तकें हैं जिन में किसी नवीन धर्म्म का वर्णन होता है और बहुधा लोग इस धर्म्म के पूछने के विषय में मेरे पास आते थे और मैं पुस्तकों का पद सुनाता और जहां लों हो सका उन का अर्थ भी बताता था ॥

मेरे पिता ने जब देखा कि मैं ईसाईधर्म्म की ओर ताकता था और हिन्दूधर्म्म और ईसाईधर्म्म को तुल्य करके पहिला खोटा और दूसरा खरा पाया था तब भयमान हो उन ईसाई पुस्तकों को मुझ से ले जाने चाहता था। और यह आज्ञा दिई कि मैं उस के साम्हने यह बखान न करूं। इस कारण मैं ने पुस्तकों को उसे न दिया मेरा पिता क्रोधित हुआ परन्तु उस समय कुछ नहीं कहा। उस के थोड़े पीछे उस ने मेरी दो पुस्तकें फाड़ डालीं परन्तु तीसरी जो धर्म्मपुस्तक का अन्त भाग अर्थात् मंगलसमाचार था उस को मैं ने ऐसी चौकसी से रक्खा कि उस के हाथ नहीं पड़ा॥

उस के पीछे मेरे माता और पिता दोनों मुझे कुपूत और अभक्त कहके मुझे झिड़कने लगे और रो रोके मेरी बिन्ती किई कि अपने धर्म्म को त्यागके अपने माता पिता पर अपमान और अपने पर सत्यानाश मत लाइयो। मैं ने उत्तर देके उन से कहा कि यह जो हमारे पुरखों का धर्म्म है सो सत्य नहीं है मैं कितने बरसों लों उस का भक्त रहा परन्तु मुझे कुछ शान्ति प्राप्त नहीं हुई। पिता ने उत्तर दिया कि कदाचित धर्म्म में नहीं परन्तु तुम्हीं में कारण हो कि कुछ उस्से प्राप्त नहीं हुआ। तुम तो बच्चे हो। हिन्दूधर्म्म की केवल थोड़ी पुस्तकें पढ़ीं और पवित्र स्थानों में से थोड़ों का दर्शन किया।

तब मैं ने यह ठाना कि धर्म्मी पुस्तकों अर्थात् शास्त्रों और पुराणों को खोज और भिन्न भिन्न स्थानों का दर्शन कर मैं हिन्दूधर्म्म को सचाई की कसौटी पर कसके निश्चय जानूंगा कि वह ग्रहण अथवा अग्रहण करने के योग्य है ॥

दोहा ।

जिन ढूंढ़े तिन पाइयां गहिरे पानी पैठ वे बपुरे क्या पाइयां जो रहे किनारे बैठ।

सो सन्यासी का ओढ़ना ओढ़ खड़ाऊं पहिन बगल में पुस्तकें दाब एक हाथ में माला और दूसरे में छड़ी लिये हुए मैं चला गया और उन पुस्तकों में मंगलसमाचार भी लिया ॥

भिन्न भिन्न घाटों पर स्नान और भांति भांति के देवस्थानों में पूजा करके और मार्ग में ब्राह्मणों के सङ्ग चर्चा करके मैं गङ्गा के तीर तीर से काशी की ओर चला गया। होते होते पहिले हरिद्वार और फिर फरक्काबाद में कितने दिन लों ठहरा। और जब मैं फरक्काबाद पहुंचा तो नहीं बूझा कि एक समय उस नगर में बास करूंगा और यह विचार नहीं किया कि मैं जो अब निर्दण्ड भ्रमणकारी हूं किसी समय इस नगर के कूचों में खड़ा होके उस के बासियों को मुक्ति का मार्ग बताऊंगा। अन्त में फरक्काबाद को छोड़ कनौज में पहुंचा। समस्त लोग जानते हैं कि प्राचीन दिनों में यह

नगर बड़े बड़े मन्दिरों और महान और धनवान राजाओं और विद्यावान ब्राह्मणों के लिये प्रसिद्ध था ॥

चलते चलते इलाहाबास में पहुंचा और वहां प्रतिदिन स्नान कर त्रिवेणी में महीना भर रहा। मैं निर्बुद्धि होके सोचा किया कि ऐसे पवित्र स्थान में जो ब्राह्मण मिलेंगे वे महा पवित्र और ऐसे गुरू होंगे जो शिक्षा देने और मानने के योग्य हैं। परन्तु क्या देखा कि जो प्रयागवाल हैं वे लोभी लालची मोही हैं औरों की भलाई नहीं परन्तु अपना लाभ करने को अति परिश्रम करते हैं यथा

गुरवोवहवस्सन्तिशिष्यवित्तापहारकाः । दुर्लभस्सद्गुरुर्देविशिष्यसन्तापहारकः ॥

अर्थात् जो गुरु अपने चेलों का द्रव्य छीन लेते हैं वे बहुतेरे हैं परन्तु ऐसे गुरु का मिलना जो शिष्य का दुःख उठाके उसे शान्ति और बिश्राम देगा यह अति कठिन है । परन्तु काशी रह गया और उस का माहात्म्य और उस के पण्डितों की विद्या और धर्म्म बहुत प्रसिद्ध था और मैं ने सुना था कि जितने लोग उस नगर के अढ़ाई कोस के निकट भी मरें वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे । मैं वहां शीघ्र पहुंचा चाहता था कि वहां के धर्म्मी पण्डितों से शिक्षा पाऊं। मुझे मान लेना अवश्य

है कि उस समय लों निराश को छोड़ मुझे और कुछ प्राप्त नहीं हुआ। जब से अपने घर को छोड़ा मुझे सर्वत्र कहा गया था कि जो तुम ढूंढ़ते हो सो थोड़े आगे मिलेगा। परन्तु सत्य तो यह है कि जो दूरी पर शिला दिखाई देती थी जब उस के पास पहुंचा तो दलदल को छोड़ और कुछ नहीं पाया। जो दृष्टि में अच्छा लगता वह स्वाद में कड़ुवा निकलता था। देवस्थानों में पूजा और घाटों पर स्नान करके और उपदेशकों की शिक्षा सुनके मैं काशी में एक बरस लों रहा परन्तु किसी रीति से शान्ति और बिश्राम प्राप्त न हुआ और मैं निराश होने लगा। जब से श्रीनगर को छोड़ा

धर्म्मपुस्तक अर्थात् मंगलसमाचार मेरे गठरी में रहती थी। मेरा अभिप्राय यह हुआ था कि हिन्दूधर्म्म को परखके निश्चय जानूं कि वह परमेश्वर की ओर से है वा नहीं। मैं यह कर चुका और उस धर्म्म को मनुष्यों की बनावट पाया सो फेर परमेश्वर के बचन की ओर लगा। और यद्यपि मैं यह नहीं कह सका कि उस समय मैं प्रभु यिसू मसीह पर बिश्वास करता हूं तथापि मैं निश्चय जानता था कि उस के समान किसी मनुष्य ने कभी बात न किई। जब उस ब्राह्मण ने जो मेरा ईषृ गुरु था देख पाया कि मैं धर्म्मपुस्तक अर्थात् मंगलसमाचार को पढ़ता था तो कहा उस को मत पढ़ो

उसे मुझे दो। और यह भी बताया कि तुम गङ्गा में नहाए और उस का दर्शन कर चुके अब नर्बदा की ओर चलके उस का दर्शन करो। मुझे फिर तीर्थ करना अप्रसन्न हुआ परन्तु अन्त में अपने धर्म्मपुस्तक को अपने पास रखके अपने गुरु की इच्छा के अनुसार करके मैं नर्बदा की ओर चला और जबलपुर के निकट उस नदी को पहुंचके मैं प्रतिदिन स्नान और देवस्थानों में पूजा करते करते उस के तीर पर चलता रहा और कितने दिनों में बरोच नगर में पहुंचा जो नर्बदा के मुहाने के निकट है॥

इस कूच में कई अठवारे बीते परन्तु उस के बीच में मन

ज्यों का त्यों चञ्चल रहा। जब धर्म्म के विषय में वहां के ब्राह्मणों से चर्चा हो रही और उन्हों ने देखा कि निराश हूं तब शिक्षा दिई कि मैं उत्तर दिशा को फिरके द्वारका को जाऊं। इस पुस्तक के पढ़नेहारों ने सुना है कि कृष्ण युधिष्ठिर को जयमान करके द्वारका को गया और वहां भील के हाथ से मारा गया। इस स्थान लों मेरा कूच अति कठिन था। परन्तु अन्त को द्वारका में पहुंचा और पूजा करने और दक्षिणा देने में एक बरस बिताया। जब मैं यह कर चुका तब ब्राह्मणों ने कहा यदि तुम गरम लोहे का छाप लागे जिस्से प्रमाण है कि द्वारका दर्शन कर चुके हो तो तुम मृत्युकाल में

निर्भय होगे और तुम्हारा कल्याण होगा। परन्तु इस को अप्रसन्न करके और यह बूझके कि अनहोना है कि केवल ऐसे उपायों से मुक्ति प्राप्त हो सक्ती है मैं लौटके चला गया। बरोच में फिर पहुंचके वहां के ब्राह्मणों ने मुझे कहा कि गोदावरी नदी की ओर चलो। वहां तुम्हारा पाप कट जायगा और तुम्हें शान्ति प्राप्त होगी और तुम्हारा मन चञ्चल न रहेगा। सो दक्खिन की ओर चलके और लम्बा कूच करके गोदावरी के तीर पर पहुंचा और जैसा नर्बदा और गङ्गा के वैसाही उस नदी पर के देवस्थानों में दर्शन करके और ब्राह्मणों से शिक्षा पाके मैं फिर काशी की ओर फिरा और औरङ्गाबाद और जबलपुर होके वहां पहुंचा॥

काशी को छोड़ घर की ओर चला और एक तेवहार के समय में हरिद्वार को पहुंचके वहां मैं ने पादरी साहिब के मुंह से सुसमाचार की बातें फिर सुनीं और और भी पुस्तकें पाईं। हरिद्वार से मेरे पिता के घर लों केवल थोड़े दिनों का कूच रह गया और इस कारण कि मन का प्रयोजन प्राप्त न हुआ तो नये तीर्थ करने को ठाना। जितने पवित्र स्थानों का दर्शन कर चुका उन से कुछ प्राप्त न हुआ सो दर्शन करने के लिये उन स्थानों में फिरा जो पर्बतों में हैं और जा जाके दर्शन करता रहा जब लों कि त्रिलोकनाथ को न पहुंचा। वहां पहुंचके मेरे मन में यह निश्चय उपजी

कि दर्शन और पूजा करने अथवा दान दक्षिणा देने अथवा श्रम और क्लेश उठाने अथवा भिन्न भिन्न और नाना प्रकार के उपायों पर आसा रखने से जो हिन्दूधर्म्म से सम्बन्ध रखते हैं पापमोक्ष और मुक्ति प्राप्त नहीं हो सक्ती। सो उन सभों को छोड़के मैं मंगलसमाचार की शिक्षा की ओर फिरा और लुधियाना के पादरी साहिबों के पास जाके उन से उस धर्म्म के विषय में जो यिसू मसीह के द्वारा से है ऐसा उपदेश पाया कि मेरा सन्देह सब जाता रहा यिसू मसीह पर विश्वास करके मन चञ्चल न रहा और मैं ने ऐसी शान्ति और आनन्द प्राप्त किया कि उन का वर्णन नहीं हो सक्ता। और उस समय

से मसीह को मुक्तिदाता जानके मैं उस का सुसमाचार लोगों को सुना रहा हूं और उन्हें बता रहा हूं कि प्रभु यिसू मसीह को छोड़ कोई दूसरा बचानेहारा नहीं है ॥

हे मित्रो यह बात विचार करने के योग्य है कि जब लों केशव राम ने मंगलसमाचार को नहीं सुना तब लों वह अचेत होके निश्चिन्तता के निद्रे में पड़ा रहा । परन्तु जब उस ने सुसमाचार की बातें सुनीं तो जानने लगा कि पाप क्या बस्तु है । वह परमेश्वर की इच्छा के बिरुद्ध है । परमेश्वर उस से घिन रखता है और पापियों को दण्ड देगा । वह यह भी बूझने लगा कि मैं पापी हूं और जो पाप से छुटकारा

न पाऊं तो नाश हूंगा । सत्य बचन पर ध्यान रखने से उस ने यह शिक्षा पाई कि जो उपाव पाप से छुटकारा देने के योग्य है वह पूजा पाठ दान दक्षिणा ब्रत जल तीरथ में नहीं और ब्रह्मा विष्णु महेश और तेंतीस कोट देव देवते हैं ही नहीं परन्तु एक सत्य परमेश्वर है जो पिता पुत्र और पवित्रात्मा होके इन तीनों व्यक्तियों में आप को प्रगट करता है और केवल प्रभु यिसू मसीह के द्वारा से जो परमेश्वर का पुत्र है और पापियों के सन्ती में अपने को दिया पाप से छुटकारा और स्वर्ग का दान प्राप्त होता है ॥

उस ने यह शिक्षा भी पाई कि प्रभु यिसू मसीह ने केवल

एक देश के लोगों के लिये नहीं परन्तु सकल देशों के लोगों के लिये अपना प्राण देके मुक्ति का मार्ग खोल दिया और उस के अनुसार सुसमाचार में वर्णन होता है कि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे। उस पर यह भी प्रगट हुआ कि जो मनुष्य पाप से छुटकारा पाया चाहता है उसे तीर्थ जाने और दूर २ स्थानों को पहुंचने के हेतु क्लेश उठाना अवश्य नहीं है केवल अवश्य है कि अपने को पापी और पाप के कारण नरक योग्य जानके यह मान ले कि प्रभु यिसू मसीह मुझे

बचाने के योग्य है और और सारे उपायों को त्यागकर केवल उसी पर बिश्वास करे और जो मनुष्य इसी रीति से मसीह पर बिश्वास करेगा वह पापमोक्षण प्राप्त करेगा और मसीह के द्वारा पवित्रात्मा की ओर से सामर्थ्य प्राप्त करेगा जिस से अपने बुरे स्वभाव को दबाके वह पवित्र और स्वर्ग में बास करने के योग्य बनेगा। फिर उस को यह उपदेश मिला कि जो मनुष्य सचमुच मसीह पर बिश्वास करता है वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा अर्थात् जलसंस्कार पाके मसीही लोगों में प्रवेश होगा और सारे कुकर्म्म को छोड़ सुकर्म्म करता रहेगा क्योंकि यह पवित्रात्मा के फल हैं॥

जब केशव राम ने परमेश्वर के सत्य बचन से यह उपदेश पाया तो उस ने उस के अनुसार किया और मसीह पर बिश्वास करके उस ने ऐसी शान्ति को प्राप्त किया जो किसी दूसरे उपाव पर भरोसा रखने से उसे प्राप्त न हुआ। हे मित्रो जैसा केशव राम का मन चञ्चल था क्या तुम्हारे मन भी चञ्चल नहीं हैं और क्या तुम यह प्रश्न करते हो कि हम क्या करें जिस्तें बिश्राम और शान्ति प्राप्त हों। भला प्रियो प्रभु यिसू मसीह कहता है कि पापमोक्ष और शान्ति प्राप्त करने का मार्ग मैं हूं। औरों ने उस पर बिश्वास करके उस का यह बचन यथार्थ पाया। तुम उस पर बिश्वास

करो तो जानोगे कि वह सत्य है और तुम्हें ऐसी शान्ति प्राप्त होगी जिस का वर्णन नहीं हो सक्ता। और यह जान लो और चेत करो कि प्रभु यिसू मसीह जो सच्चा मुक्तिदाता है वह ऐसे दूर स्थान में नहीं रहता कि उस पास पहुंचने के लिये लोगों को बड़े २ तीर्थ करके दुःख और क्लेश उठाना अवश्य है। वह परमेश्वर होके सर्वत्र है और तुम जिस स्थान से उस की ओर पुकारके उस की बिन्ती करो वह तुम्हारी सुनेगा। उस ने लाखों करोरों को पाप से छुटकारा दिया क्या तुम्हें छुटकारा न देगा। इस बात को मानियो कि वह सामर्थी होके पापमोक्ष देने के योग्य है और प्रेमी

होके उन सभों को जो उस पर बिश्वास करेंगे मुक्ति देने को सिद्ध है ॥

गीत ।

प्रिय प्रभु दया सागर. कृपामय और ज्योति स्वरूप।
सर्वदर्शी जग उजागर. तेरा प्रेम है क्या अनूप ॥
निस्सन्देह तू है जगबन्धु. पापियों से रखता प्रेम ।
चाहता है तू कृपासिन्धु. सब मनुष्य का कुशल क्षेम ॥
ईसा त्राणी और उपकारक. आस में रखता तुझ ही पर ।
तुझे छोड़ कौन है निस्तारक. प्रभु मुझे ग्रहण कर ॥

मुक्तिमार्ग में मैं चलूं. पकड़ ले तू मेरा हाथ।
तेरे पास मैं सदा रहूं. जो तू रहे मेरे साथ॥

इति।

कृष्टियन वर्नेक्यूलर इडूकेशन सुसैटी की ओर से इलाहाबाद मिशन प्रेस में छपी सन १८७५ ई०।
२ छपाई ५००० पुस्तक। दाम ३ पाई॥

Library of Princeton
Theological Seminary